लन्दन
६ मई, २००६

संदेश संख्या – ६१

काल

कालानुक्रमिक (Chronological) या मापित काल तथ्यात्मक और तकनीकी होता है। जैविक या चक्रीय समय तथ्यात्मक किन्तु प्राकृतिक होता है। परन्तु मानसिक निबन्धन एवं संचय पर आधारित काल, प्रतिक्रिया और आग्रह उत्पन्न करता है तथा आडम्बर और अनुसरण को जन्म देता है । यह ''जो है'' को देखे बिना ''ऐसा होना चाहिए'' की चाहत में डूबना है । यह मानसिक–काल ही मानव जाति की विभेदकारी चेतना की मूलभूत विकृति है ।

यह शरीरी चेतना विभिन्न खण्डों यथा – सुरक्षा की आकांक्षा, असुरक्षा की आशंका तथा इनके साथ–साथ चलने वाली विश्वास–पद्धतियों पर मानसिक–निर्भरता से बनी है और इसी से भावुकता, विचार, द्वन्द्व, ईर्ष्या आदि उत्पन्न होते हैं। शरीरी चेतना ''मैं'' को एक महाखण्ड के रूप में प्रोत्साहित कर तथा यह मानकर कि यह महाखण्ड चेतना के अन्य खण्डों से श्रेष्ठ है, जटिलता में उलझ जाती है। फिर, इस भ्रामक और विभेदकारी ''मैं'' को अन्य अंशों के साथ हस्तक्षेप हेतु सत्ता और साधन प्रदान किया जाता है और इस तरह यह मजबूत होता रहता है। पुनः यह ''मैं'' चेतना के क्षेत्र में अत्यधिक विभाजन कर स्वयं को हमेशा निरन्तरता और चिरस्थायित्व देने का प्रयास करता है। यह विभाजनशीलता असहमति के साथ–साथ सहमति और विवाद के साथ–साथ समझौता भी लाती है। यही हमें सत्य के बारे में विचारों, अवधारणाओं, निष्कर्षों और निर्णयों में उलझाकर रखती है। यह द्वैतता शरीर, रक्त–कोशिकाओं और अस्थिमज्जा को स्वयं द्वारा स्वयं के लिए प्रत्यक्ष रूप से सत्य की दिव्यता को स्पर्श करने के अवसर से वंचित कर देती है। यह हमें विभेदकारी चित्तवृत्ति के उधारी एवं सुने–सुनाये विचारों में ही उलझाये रखती है । काल का तृतीय आयाम अर्थात् मानसिक–काल का यही स्रोत है । कालानुक्रमिक प्रथम है और जैविक द्वितीय। अधिकांश लोगों के लिए काल के इन तीन आयामों को समझना ही पर्याप्त है। मानसिक काल से मुक्ति सबसे बड़ा प्रबोध है। दूसरा कोई प्रबोध नहीं । मानसिक काल से मुक्ति हो जाने से जैविक और कालानुक्रमिक काल के साथ एक नया संबंध उत्पन्न हो जाता है यदि कोई शरीर ७० वर्ष का है, फिर भी उसमें एक २० वर्षीय नवयुवक की ऊर्जा हो सकती है। तब कालानुक्रमिक काल शरीर में समता की ऊर्जा को कभी भी बाधित नहीं करता ।

भारत के प्राचीन ऋषियों ने अपने जागृत एवं अविभाजित सजगता में काल के निम्नलिखित सात आयामों को देखा है :

१. कालानुक्रमिक या रेखीय समय (विज्ञान काल) : काल की माप ।

२. जैविक या चक्रीय काल (प्र–लय काल) : प्र अर्थात् प्रथम (प्रारम्भ) तथा लय अर्थात् विलय (समाप्ति)। जो भी अभिव्यक्त है उसका आदि और अन्त ।

३. मानसिक काल (स–काल) : स अर्थात् सहित । काल के साथ सकारात्मक या नकारात्मक संबंध ।

४. मानसिक काल से मुक्ति (मन्+त्र) : मन् अर्थात् मन; त्र = त्राण अर्थात् मन से परे । मन ही मानसिक काल है ।

५. मुक्ति को सूक्ष्म–भाव से अनुभव करने वाला (लिगं–मात्र या मन्त्रेश्वर) किन्तु स्थूल अनुभवकर्त्ता (अहंकार) रहित ।

६. पूर्ण अनुभव शून्यता (अलिंग या मन्त्र–महेश्वर) : अलिंग–अरूप। सूक्ष्म–भाव से अनुभव करने वाले का भी विलय हो जाता है।

७. शून्यता – अनन्त रिक्तता, चैतन्य की दिव्यता, परमानन्द और कृपा (शिव–परमता)। यह 'अनुभव' और शाब्दिक अभिव्यक्ति से बिल्कुल ही परे है ।

मूलाधार प्रथम है,

यह उपर्युक्त काल का प्रथम आयाम है।
स्वाधिष्ठान द्वितीय है,
प्रजनन–वृत्ति का स्थान – जैविक प्रक्रिया से सम्बन्धित।
मणिपुर तृतीय है,
मन का स्थान जो भय एवं लोभ से चालित है ।
अनाहत चतुर्थ है,
जीवन, ह्रदय, निर्मन का स्थान ।
विशुद्ध पंचम है,
प्रज्ञा का स्थान ।
आज्ञा छठा है,
पूर्ण शान्ति का स्थान ।
सहस्रार काल का सातवाँ आयाम है।
सातवाँ अर्थात शून्यता में विस्फोट कुण्डलिनी है ।
कुण्डलिनी का अनुभव नहीं हो सकता। इस संबंध में
धूर्त्तों एवं उनकी चालों से सावधान रहो।

नमः शिवाय

उपसंहार के रूप में एक दृांत

एक गर्भवती नारी काल के प्रथम चार आयामों को धारण कर सकती है। उसका गर्भ नव माह तक रहेगा (प्रथम आयाम) । उसका गर्भ जीवन–चक्र का प्रारंभ है (द्वितीय आयाम) । वह गर्भ के परिणाम के संबंध में मानसिक रूप से उलझ सकती है (तृतीय आयाम) । मानसिक–काल के प्रति अनुपलब्धता गर्भ का योग है। यह उसे गर्भावस्था के आनन्दपूर्ण होने, अच्छी तरह प्रसव होने तथा शिशु से प्रेम के आयाम में जुड़ने के योग्य बनाता है जो कि मन से नहीं होता (चतुर्थ आयाम) ।